International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 268-274

परसाई साहित्यः शैली–विवेचन

डॉ. मोहन लाल शर्मा*

प्रस्तावना

शैली की परिभाषा

''वस्तु की अभिव्यक्ति के प्रकार को शैली कहते हैं। बाबू गुलाबराय के शब्दों में वस्तु और शैली का पार्थक्य उतना ही असम्भव है जितना कि म्याऊ की ध्वनि का बिल्ली से।''

''काव्य में शैली का वही स्थान हैं जो मनुष्य में उसकी आकृति और वेश भूषा का। यद्यपि यह हमेशा ठीक नहीं कि जहाँ सुन्दर आकृति हो वहां सुन्दर गुण भी हो तथापि आकृति और वेश भूषा गुणों के मूल्यांकन में बहुत कुछ प्रभावित करते हैं।''

शैली विचारो का परिधान हैं। अर्थात हम अपने विचारो को शैली के माध्यम से प्रकट करते हैं। जैस हमारे विचार होंगे वैसी ही हमारी शैली होगी ओर जैसा हमारा व्यक्तित्व होगा वैसा ही हमारे विचार होंगे। जिस प्रकार किसी भी व्यक्ति की वेश भूषा से उसकी रूचि का पता लगा लेते हैं उसी प्रकार शैली द्वारा हम लेखक के विचारों की गम्भीरता का पता लगा लेते हैं।

शैली और व्यक्तित्व

वफन महोदय ने लिखा है कि ''स्टाइल इज दी मैन हिमसेल्फ'' शैली मनुष्य का व्यक्तित्व है।

शुक्ल के बारे में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है–

"वे इतने गम्भीर और कठोर थे कि उनके वक्तव्यों की सरसता उनकी बुद्धि की जाँच सूख जाती थी और उनके मतों का लचीलापन जाता रहता था। आपको या तो हाँ कहना पडेगा या ना बीच में खड़ें होने का कोई उपाय नहीं। उनका अपना मत सोलह आने अपना है। वे. तनकर कहते है मैं ऐसा मानता हूँ तुम्हारे मानने न मानने की मुझे परवाह नहीं।''

शुक्लजी के व्यक्तित्व की ये विशेषताएँ अगर हरिशंकर परसाई पर लागू की जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं।

शैली स्वयं व्यक्ति है, परसाई के निबन्धों की शैली ने सरसता, सरलता और गम्भीरता स्पष्ट लक्षित होती है। शैली प्रयोग की दृष्टि से व्यंग्य निबन्धों में विविधता दिखाई देती है। परसाई जी द्वारा प्रयुक्त शैलियों के विविध रूप उनकी शिल्पात्मक प्रतिभा और कौशल को व्यक्त करते हैं। विषय और विचारों के अनुरूप इन्होंने विविध शैलियों का अत्यन्त सजीव और सटीक रूप में प्रयोग किया है। अपने शैलीगत वैशिष्ट्य के कारण ही इनकी रचना साधारण से साधारण पाठक के लिए भी सम्प्रेषणीय बन सकी है।

शैली की सजगता

परसाई जी के निबन्धों में अपनी निजी शैली है। इनका कसाव स्वयं का हैं। शैली की सीमा स्थान और स्थिति के बीच होती है तथा व्याप्ति परम्परा और अनुसंधान की तरंगों में परम्परा स्थान, स्थिति और अनुसंधान को एक निजी संगति में लाकर कोई लेखक अपनी शैली की खोज कर पाता है।

* भाषा–संपादक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान।

परसाई जी ने अपनी पैनी तीखी व्यंग्य शैली के माध्यम से वर्तमान व्यक्ति से लेकर समाज तक के राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों को तीक्ष्ण दृष्टि से देखा, परखा और फिर उन पर व्यंग्य पूर्ण ढंग से आघात किये।

''व्यंग्य भाषा संदर्भ विशेष की भित्ति पर फैले फैल रही वह अभिव्यंजक लता है जो कहीं शीतल और कहीं तल्ख प्रभाव छोड़ती हुई लगातार अर्थ की लक्ष्यैकचक्षुता का निरूपण करती है। व्यंग्यकार शैलीय उपकरणों की नई – नई कलमें लगाकर व्यंग्य भाषा की प्रसंगोद भावना की अर्थशिल्पीय संरचना के परिसर में उगाता है।'' इसीलिए व्यंग्यभाषा की चमत्कार पूर्ण विच्छलता और आस्वाद में गहरी उतरती हुई सहजता परसाई जी की सावधानी और शैलीय कलाकारी के प्रति आश्वस्त करती है।

एक उदाहरण लीजिए–''जो नहीं है उसे खोज लेना शोधकर्ता का काम है। काम जिस तरह होना चाहिए उस तरह न होने देना ? विशेषज्ञ का काम है। जिस बीमारी से आदमी मर रहा है, उससे उसे न मरने देकर दूसरी बीमारी से मारना डॉक्टर का काम हैं। अगर जनता सही रास्ते पर जा रही है तो उसे गलत रास्ते पर ले जाना नेता का काम है।''

विरासत की विधियों को तोड़कर अपनी शैली अर्जित करना कठिन काम है। मुक्तिबोध परसाई ओर रामविलास शर्मा कि रचनाओं में जो व्यग्रता और तनाव की चिंगारियां मिलती है वे अन्यत्र कम अथवा अंशकालिक है।

''हरिशंकर परसाई जी की शैली इसीलिए विशेष है, क्योंकि उन्होंने आदमी की व्यक्तिगत प्रवृत्तियों में विकास के संकेत देखे। ठण्डे समाज में स्थिर सौन्दर्य बोध और पूर्व निर्धारित राष्ट्रीय शैली बहुत समय तक काम करती है। पर आजाद समाज में लेखकों की निजी शैलियां फूटने लगती हैं। स्थितियों में रूपान्तरण का काम एक बार ही नहीं होता दिनो तक उनमें दोगलापन मौजूद है। दोगलेपन की भी सृजना में भी अपनी निजी शैली है। प्रकट और दुराव की संघर्ष गाथा होती है। काल की ऐसी ही घड़ी में परसाई जी ने अपने निबन्धो की शैली खोजी रचनात्मक मानक बनाये और सटीक भाषा रची। उन्होंने भाषा में संवेदनात्मक प्रयोजन उभारा। इसी कारण उनकी शैली में एक ऐसा नया तत्व उभरा कि लोग चकित हो गये। उनकी रचनाओं की माँग बढ़ी कॉलम लिखने लगे और व्यंग्य लेखकों का एक स्कूल बन गया। यू.बी. बोने शैली के मामले में लिखा था कि वह संस्कृ ति का रचनात्मक सबूत होती है। एंगेल्स ने कहा था कि समाज की स्वतन्त्रता व्यक्ति की भी होती है। दोनों की बातों को मिलाये तो परसाई जी की शैली के स्रोत मिलते हैं। मसलन देशी स्वभाव आजादी का निजी प्रभाव और साहित्य सृजन में रचनात्मक प्रयत्न की संगति। इसी कारण उनकी शैली स्वातन्त्र्योत्तर जीवन से जुड़े हर आदमी की संवेदनाओं को छूती है। वह अरूचिता को तोड़ती है और संस्कृति को जनोन्मुख बनाती है।''

कन्धे श्रवण कुमार के का एक अंश देखिए–"कितनी कॉवडे है–राजनीति में साहित्य में कला में, धर्म में, शिक्षा में, अन्धे बैठे हौ और आँख वाले उन्हें ढो रहे हैं। अन्धों में अजब काइयांपन आ जाता है। वह खरे और खोटे सिक्को को पहचान लेता है। पैसे सही गिन लेता है। उसमें टटोलने की क्षमता आ जाती हैं। वह पद टटोल लेता है। नये अन्धों के तीर्थ भी नये है–काशी, हरिद्वार, पुरी नहीं जाते। इसी कॉवडे वाले अन्धे से पूछो कहाँ ले चलें। वह कहेगा तीर्थ। कौन सा तीर्थ। जवाब देगा कैबिनेट मंत्रीमण्डल उस कॉवडे वाले से पूछो तो वह भी तीर्थ जाने को प्रस्तुत है। कौन सा तीर्थ चलेंगे आप जवाब मिलेगा अकादमी विश्वविद्यालय। मगर कॉवडे हिलने लगी है। ढोनेवालो के मन में शंका पैदा होने लगी है। वे झटका देते हैं, तो अन्धे चिल्लाते हैं ओ पापी। यह क्या कर रहें हो। क्या हमें गिरा देंगे और ढोनेवाला कहता है अपनी शक्ति और जीवन हम अन्धों को ढोने में नही गुजारेंगे।"

यह परसाई जी कि बिम्ब में सोच को रूपान्तरित करने की शैली का चमत्कार है। इस शैली द्वारा आदमी की नयी खुशी उत्साह और सक्रियता उभरती है। मुक्ति की चिन्ताओं में वृद्धि होती है। इससे सांस्कृतिक बदलाव आता है। परसाई जी की शैली एक तरह से उनकी अधिकतम आजाद नागरिक ओर सांस्कृतिक कर्मी की मिसाल है। यह कला के क्षेत्र में जनतन्त्रीकरण का प्रयास है।

व्यंग्यभाषा के स्तर पर शैली एक वैभवशाली चित्रशाला है। शैली वैज्ञानिक विश्लेषण स्पष्ट तथा उन शैलीय उपकरणों की परिक्रमा है, जिनकी सहायता से व्यंग्य भाषा की संरचना और अभिव्यंजकता का निर्माण हुआ है। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अपनी बहुधर्मिता दर्शाती हुई अपने शैलीय उपकरणों के कारण रचना ओर सन्दर्भ में प्रवेश का रास्ता सुकर बनाती है। शैली वैज्ञानिक समीक्षण के केन्द्रीय सूत्रों चयन, विचलन और अनूठी बहुधर्मिता का स्पष्ट संकेत व्यंग्यभाषा की शैलीय व्याख्या करती है

शैली के गुण

परसाई जी की शैली में हमें निम्नलिखित गुणों की झलक देखने को मिलती है जो उनकी शैल्पीक चेतना की प्रतिभा को उजागर करती है। ये गुण पाश्चात्य विद्वानों ने माना है–

- **सरलता**–जब लेख को व्यापक बनाने के लिए लेखक सरल भाषा, सरल शब्द और सरल विचारों का प्रयोग करता है। वह न पाठक को कठिन शब्दों के जाल में फँसाने का प्रयत्न करता है और न वाक्यों का ही ऐसा घुमा–फिराकर जाल बनाता है जैसे–

''बहरहाल, साधो ये जो पकड़े गये, समाज कल्याण अधिकारी हैं। इनका काम समाज का कल्याण करना है। समाज को चरस चाहिए, तो इनका कर्तव्य है कि ये चरस का इन्तजाम करें।''

- **स्वच्छता**–इस शैली के अन्तर्गत लेखक अपने गूढ़ से गूढ़ विचारों को इतनी स्पष्टता खोल कर पाठक के सामने रखता है कि वह नित्य के जीवन में आने वाली साधारण घटनाओं की भाँति उन्हे समझ लेता है यथा–

"प्रजा से प्रसन्नतापूर्वक धन खींच लेना, राजा का आवश्यक गुण है। उसे बिना नश्तर लगाये खून निकालना आना चाहिए।''

- **स्पष्टता**–शैली का तीसरा गुण हैं, इसके प्रभाव से लेखक पाठक के ह्रदय में घर कर लेता हैं, अपनी बात को उसकी बात बनाकर उसके ह्रदय में उतरता है–यथा–

''पर हम क्या दें ? महायुद्ध की छाया में बढ़े हम लोग हम गरीबी और अभाव में पले लोग केवल जिजीविषा खाकर जिये हम लोग हमारी पीढ़ी के बाल तो जन्म से ही सफेद हैं।''

- **प्रभावोत्पादकता**–यह गुण परसाई जी के निबन्धों में जगह–जगह बिखरा पड़ा है। उस समय यह गुण पैदा होता जब लेखक की रचना इतनी महत्वपूर्ण बन जाय।

कि पाठक उसे अपने जीवन पथ के लिए प्रभावित होकर मार्ग दृष्टा के रूप में अंगीकार कर सकें यथा–

''जो यहाँ त्याग करेगा वह उस लोक में पायेगा जो यहाँ दुःख भोगेगा, वह वहाँ सुख पायेगा।''

शैली के विविध रूप

निबन्धकार जब व्यक्ति या समिष्टि की किसी विसंगति या दुष्प्रवृति को लेकर शब्दों की बारीकी नोंक से यथार्थ को गद्यमयी भाषा में उद्घाटित करने का प्रयास करता है, तब व्यंग्यात्मक निबन्धों की सृष्टि होती है। व्यंग्य निबन्ध अपनी कथ्य और शिल्पपरक विशेषताओं के कारण हिन्दी निबन्ध के अन्य प्रकारों– भावात्मक, विवरणात्मक, वर्णनात्मक, आदि सभी से भिन्न हैं। परन्तु अन्य निबन्धों की विशेषताएँ इसमें उपलब्ध होने के कारण सभी से पृथक है भिन्न है। लक्ष्य एवं उद्देश्य की दृष्टि से हास्य और व्यंग्य में भी एकरूपता दिखाई नहीं देती। परसाई के व्यंग्य निबन्धों में वस्तु या भाषा की दृष्टि से जहाँ व्यापकता और विविधता दिखाई देती है, वहीं शैली–शिल्प की दृष्टि से भी अनेक प्रयोग किये है। अलग–अलग रचनाओं में तो शिल्प की दृष्टि से विविधता है ही एक ही रचनाकार की भिन्न–भिन्न रचनाओं में भी यह विविधता दिखाई देती है।–

परसाई जी ने शिल्प के क्षेत्र में नये नये गवाक्षों को खोला है। एक अभिव्यंजना शैली का अंश देखिए जो निबन्ध तिवारीजी 1 की कथा से द्रष्टव्य है–

''हमें आपकी बेटी को बहू के रूप में पाकर प्रसन्नता होगीं। लड़के के भी यही इच्छा है। पर परम्परा को तो निभाना ही पड़ता है। बाप–दादों की लीक से हटा नहीं जाता। धर्म का पालन न करने से अमंगल होता है। आगरा के पाण्डेजी चालीस हजार देने को तैयार हैं। पर हम आपसे सिर्फ तीस हजार में सम्बन्ध तय कर लेंगे। इससे कम नहीं होगा।''

अभिव्यंजकता के व्यंग्यधर्मी लेखन के लिए व्यंग्यशैली एक विलक्षण लय पर सन्तरण करती है। ध्वनिप्रभाव और काव्यछवि पैदा करके वाला एक अंश देखिए

''सामने बैठे चित्रगुप्त बार–बार चश्मा पोंछ थूक से बार बार पन्ने पलट रजिस्टर पर रजिस्टर देख रहे थे।''

परसाई के निबन्धों में भाषा प्रधान शैली का अधिक प्रयोग हुआ है। जो विभिन्न रूपों में लेखन में प्रयुक्त होती है। जिसमें सरल भाषा शैली, मुहावरा प्रधान शैली, गुम्फित भाषा शैली का अत्यधिक प्रयोग मिलता है। उक्ति प्रधान शैली का एक उदाहरण देखिए–

''दुनिया में कहीं भी गाय की पूजा नहीं होती है इसलिए वह दूध के काम आती है। यहां गाय पूजी जाती है इसलिए दंगे के काम आती है।''

इसी तरह विचार अथवा विषय से सम्बन्धित शैली का प्रयोग भी परसाई के निबन्धों, कहानियों, संस्मरण, लघुकथाएँ तथा उपन्यासों में बहुतायत मिलता है।

- **विचार प्रधान शैली**–इसमें लेखक के व्यक्तिगत विचार होते हैं या उस विषय से सम्बन्ध रखने वाले विचार कि जिस पर निबन्ध लिखा जा रहा है।

  ईडन के सेव कथा से यह अंश द्रष्टव्य है–

  ''मैं हमेशा ईडन बाग के सेवे खाती हूँ। ये स्वादिष्ट और गुणकारी होते हैं। इन से मेरी त्वचा मुलायम और चमकदार होती है।''

- **व्यक्ति प्रधानशैली**–जिसमें किसी व्यक्ति विशेष के भावों का उसकी क्रियाओं का और उसकी मनोवृत्तियों को जीता जागता चित्रण पाठक को मिलता है। निबन्ध 1 रेलें क्यो टकराती है ? का ये उद्धरण देखिए–''गनी खां चौडे मुँ वाले मंत्री हैं। बहुत बोलते है और हर कुछ बोलते हैं। पहले घोषणा करते रहेत थे कि ज्योति बसु की सरकार को बंगाल की खाड़ी में फेंक दूँगा। मगर यह नहीं करे सकें। उनकी अपनी रेलवे बोगियाँ पटरी से उतरने लगीं। साधो, मद्रास में पिछले साल जब घोर जल संकट था तब गनी खाँ चौधरी पानी की टंकियों की रेलगाड़ी लेकर खुद मद्रास पानी देने पहुँचे थे।''

- **आलोचनात्मक शैली**–व्यंग्य का आधार सी है। प्रत्येक व्यंग्य लेखन में बिना आलोचना के अपनी बात को कहना असंभव है अतः ऐसे कई निबन्ध परसाई ने लिखे है जिनमें इस शैली की प्रधानता रहीं है–स्वर्ग से नरक में देखिए–

''अरे आश्चर्य देव यह कौन प्राणी है। बड़ा विचित्र है। और इसके घर में इतना अनाज भरा हुआ है। यह अन्न तो उस किसान का है न। फिर इसके पास कैसे आ गया। और यह द्रव्य यह तो श्रमिक ला रहा था इसका कैसे हो गया। यह तो दिन भर से यहीं महल में बैठा है।''

वास्तव में परसाई की व्यंग्यात्मक शैली की यह पारदर्शी भूमिका है, जिसके कारण प्रत्येक कार्य पद्वति और गतिविधि के लिए निर्धारित छद्म पूरी तरह बेनकाब हो जाता है। परसाई का व्यंग्य फलक जितना बड़ा है, उतनी ही वैविध्यपूर्ण है उनकी शैली। एक ओर परसाई जी ने अपनी कई एक रचनाएँ शुद्ध फैन्टेसी के रूप में लिखी हैं, तो दूसरी ओर पौराणिक प्रसंगों का नूतन संस्करण भी प्रस्तुत किया है। परम्परित कथा शिल्प की फैन्टेसी शैली को/जैसे उनके दिन फिरे/बैताल की छब्बीस वीं कथा

सदाचार का ताबीज/राग–विराग/सुजलां सुफलां/कबीरा आप ठगाइए,/उर्वशी प्रसंग ईश्वर और रायल्टी जैसी रचनाओं में अपनाया है। दूसरी और पौराणिक फैन्टेसी का चरम विकास

- **भावात्मक शैली**–इस शैली में वाक्य अपेक्षा कृत दीर्घ और पदावली तत्सम प्रधान है। इसमें भाषा संयुक्त भाव के अनुकूल होती है। इसे शैली में लेखक के व्यक्तित्व की छाप दृष्टि गोचर होती है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार–''किसी गम्भीर विचारात्मक लेख के भीतर कोई मार्मिक स्थल आ जाने पर लेखक की मनोवृत्ति भावोन्मुखी हो जाती है और वह काव्य की भावात्मक शैली का अवलम्बन करती है।''

परसाई जी की भावात्मक शैली का एक उद्धरण देखिए जो निबन्ध 'प्रेमचन्द के फटे जूते' से लिया है–''मगर यह कितनी बड़ी ट्रेजड़ी है कि आदमी के पास फोटो खिंचाने को भी जूता न हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते–देखते तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रों पड़ना चाहता हूँ, मगर तुम्हारी आँखों का यह तीखा दर्द भरा व्यंग्य मुझे एक दम रोक देता है।

- **विवेचनात्मक शैली**–गम्भीर विषयों के विवेचन में परसाई जी ने इस शैली का प्रयोग किया है। तर्कपूर्ण ढंग से सुसम्बद्ध विचार श्रृंखला और सूक्ष्म दृष्टि के साथ इन्होंने अपनी मान्यताओं और स्थापनाओं को निर्भिकतापूर्वक सामने रखी हैं। ऐसे निबन्धों में इनके आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ मर्मस्पर्शी पकड़ और उसका गम्भीर विवेचना मौजूद है–यथा–

''तुम सब हिंसक पशु हो गये हो। स्वर्ण को मनुष्य जीवन से तोलने लगे हो। तुम मनुष्य के शव पर हेम मंदिर'' ''निर्मित करने लगे हो। तुम धरा को जल के बदले मानव रक्त से सींचने लगे हो। तुम कैसे हो गये हो।''

- **आत्मपरक या आत्मकथात्मक शैली**–परसाई जी इस शैली के अन्तर्गत विषय के साथ–साथ अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन की अनुभूतियों का विवेचन किया है। भाषा सरल एवं व्यावहारिक है, जिसमें रचना की गम्भीरता के साथ–साथ उनका विनोद एवं मधुरहास भी दृष्टिगोचर होता है–उदाहरण के लिए–"सन्यास लेनेवाला राजनीतिक इस साधु की तरह है जो सुबह से ईश्वर चिन्तन के बहाने भोजन चिन्तन करता है। दोपहर को माल खाकर शाम तक ईश्वर चिन्तन के बहाने नारी–चिन्तन करता है और अंधेरा होने पर किसी भक्तिन के घर में घुस जाता है।''
- **उद्धरण शैली**–अपने विचार, भाव और कथ्य के समर्थन के लिए संस्कृत, हिन्दी, उर्दू के उद्धरणों का प्रयोग किया है। जैसे–

''आप ठगे सुख होत है, और ठगे दुख होय।''

''माया महा ठगिन हम जानीष् ठगनी क्या नैना भटकावे''

''गली तो चारो बन्द हुई अब हरि से मिलूं कैसे जाय।''

''बना है शहका मुसाहिब फिरै है इतराया बना शहर में गालिब की अखब गया है।''

- **प्रश्न शैली**–कहीं–कहीं भावुकता और आवेग की मिली–जुली स्थिति में प्रश्न शैली का प्रयोग भी किया है। संवाद बड़े है पर उनमें एक रोचकता बनी रहती है। यथा–

''कहाँ जा रहे हो ? बोले– प्रयाग।

मुंडन किसलिए? बोले फादर की मृत्यु हो गई।'' इसी तरह–''तो फिर खटखटाने पर दरवाजा कौन खोलता है ?

उसने कहा–मैं खोलता हूँ। यही तो मजा है। लोग मुझे न्याय समझ लेते हैं।

हमने पूछी–तुम दोनों भाई किसके बेटे हो ?

उसने कहा–'एविडेंस ऐक्टश हमारा बाप है और इण्डियन पेनल कोड माँ है।'

- **तुलनात्मक शैली**–कहीं–कहीं परसाई के निबन्धों में इस शैली के भी दर्शन होते है–जैसे–

''पुरुष पर स्त्री की विजय के अनेक कारणों में सबसे बड़ा यह है कि स्त्री, पुरूष के सम्बन्ध के अपने मनोभावों को प्रकट करने का लोभ कुछ देर के लिए संवरण कर सकती है, पर पुरूष अपनी चाह को व्यक्त करने की उतावली करता है।''

- **व्यंग्य प्रधान शैली**–परसाई के साहित्य के प्राण है। यही शैली निबन्ध, उपन्यास, कहानी सभी में इस शैली के दर्शन होते हैं। एक उदाहरण देखिए–

''पर राष्ट्रीय समस्या तो छूटी जा रही है। चुँगी चोरी कैस होगी। अभी तो हम निगम की सीमा के बाहर डिपो बनाये हुए हैं और रात को चोरी से स्टॉक ले आते है। कुछ खिला पिला देते हैं। दारू की की एक बोतल में नाके या मुंशी मान जाता है। वह बेहोश हो जाता है और हम काम कर लेते हैं।''

- **लाक्षणिकता शैली**–''भारतीय बनिया संस्कृति–एक अलग संस्कृति है। इस संस्कृति का लक्षण है कि किसी भी मामले में आदमी के मन में पहिले यह विचार आता है कि मैं इसमें कहाँ बेईमानी कर सकता हूँ।''

व्यंग्य निबन्ध–सुदामा का चावल 'लंका विजय के बाद, मैनका तपोभंग, त्रिशुंक बेचारा, हनुमान की रेलयात्रा, रामकथा क्षेपक जैसी रचनाओं में हुआ है। इन्होनें व्यंग्य लेखन के लिए लघुकथा के शिल्प को ध्यान में रखकर भी अनेक रचनाओं की सर्जना भी की हैं–जैसे इडन के सेब ह्रदय, दवा, दंड, दुरूख, रोटी, देश भक्ति, खेती लिफ्ट अमरता अश्लील पुस्तकें प्रथम स्मगलर, चौबेजी की कथा, लड़ाई, खून, सुशीला खोटो रूपया सलाहकार, क्षमावली शॉक, गधा और मोर, पुण्य, चन्दे का डर, बात नयी धारा प्रतिष्ठा पद पूजन जैसी लघु कथात्मक व्यंग्य रचनाओं की लम्बी सूची इन्होंने तैयार की है। इसी तरह विचारात्मक शैली में एक बड़ी चोरी,पहिला सफेद बाल, बचाव पक्ष का समर्थन, बेईमानी की परत, पगडण्डियों का जमाना तथा पत्रात्मक शैली में मूल्यों का विघटन पुस्तकों के समर्पण देशभक्ति से गद्दारी, चीनी हमला और भ्रमजाल, संवाद और मौसम जैसी अनेक रचनाएँ हैं।

हालांकि कुछ कमजोर रचनाएँ भी है जो केवल गुदगुदी उत्पन्न करके समाप्त हो जाती है। जैस–ऑगन में बैंगन, विज्ञापन में बिकती नारी, बारात की वापसी, फोन टालने की कला, स्नान, जिनकी छोड भागी हैं, राम की लुगाई ओर गरीब की लुगाई इत्यादि अनेक है। परन्तु फिर भी परसाई की भाषा और शैली की कौशलता के लिए डां. कृष्णकुमार सिन्हा के ये शब्द सशक्त और सटीक है– सीधी–सादी भाषा में वक्रता उत्पन्न करना असाधारण साधना की अपेक्षा रखती हैं और इस दिशा में परसाई अद्वितीय है। उनका हर शब्द व्यंग्य का पुट लिए रहता है।

कथ्य और शिल्प दोनों की दृष्टियों से व्यंग्य की तलवी और चिनगारियों को परसाई जी ने अभिव्यक्ति दी है। परसाई जी का कथ्य परसाई के भीतर का लेखक सामाजिक राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन के प्रत्येक अन्तर्विरोधों को उसकी सम्पूर्ण इयत्ता में देख लेता है ओर यही से वह बेपनाह भूमिका की गुंजाइश नहीं रह जाती कि एक दम सामने प्रस्तुत हो रहे यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक तैयारी के साथ रचे बुने शिल्प के गढ़ने का जद्दोजहद उठाए और उसे किसी सुविचारित शिल्पकारिता में परिणित करने की कोशिश करें।

परसाई जी एक सजग शिल्पी है। उनकी मौलिकता और प्रतिभा क्षमता को उनके शिल्पी प्रयोगों के सहारे समझा जा सकता है। शिल्प विधि के उपकरणों में प्रमुख भाषा है। भाषा के पश्चात बिम्बों और प्रतीकों का। परन्तु भाषा का जितना महत्व होता है। उतना ही कथ्य का जो उसको अभिव्यंजना प्रदान करने में सहयोग देती है। इन्होंने कथ्य और शिल्प में जो प्रतीक बिम्ब रूपक का प्रयोग किया है वो पारम्परिक है। इनका कथ्य जीवन के तथ्यों को उजागर करने में समर्थ है। अपनी मौलिक अभिव्यक्ति को समस्त खतरों में डालकर उन्होंने पारम्परिक भाषा शैली के मठों और दुर्गों को तोड़कर अपने अरूण कमल वाले उद्देश्य को भाषिक स्तर भी प्राप्त किया है। शिल्प ही शरीर हैं, शरीर के बिना ह्रदय आत्मा या बुद्धि कहां रहेंगे। समसामयिक जीवनके विविध अंगों की विषमताओं को सूक्ष्मता के साथ पकड़ने के क्रम में परसाई के कथ्य में सामयिकता एवं विशिष्ट संदर्भ का बोलबाला हो गया है।

परसाई जी ने स्वयं को स्वीकार किया है– ''अवसर को पकड़ना बड़ी भारी विद्या है''

इस भारी विद्या में परसाई जी भारी पंडित है। उन्होंने नई नई समस्याओं ओर घटनाओं को विषय बनाकर अपनी रचनाओं का प्रस्तुतिकरण किया है। दीवाली, चीनी, आक्रमण, ब्लॉक आडर'' मध्यावधि चुनाव परिवार नियोजन और चन्द्रयात्रा से लेकर प्रेमपुजारी फिल्म तक पर परसाई जी ने अपनी कलम को घिसा है। इस क्रम में इनके व्यंग्य की शैली ओर चेतना को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

भगवान सिंह के शब्दों में– ''तंत्र भंजक व्यंग्यकार है वे। शायद प्रतिबद्धता लेखकीय साहस ओर दृष्टि के खुलेपन के ख्याल से स्वातंर्त्योत्तर भारत के सबसे सशक्त व्यंग्यकार उनकी रचनाओं में खुला प्रहार है। यथास्थिति पर व्यवस्था पर प्राचीन रूढियों और संस्कारों पर, और प्रायः सभी रचनाओं में बदलते मूल्यों और क्रान्तिकारी शक्तियों और संभावनाओं के प्रति गहरा सम्मान भाव है, उपेक्षित और शोषित वर्गों के प्रति सहानुभूति और ढोंग का उद्घाटन है।''

जीवन के विद्रूप को अपनी विशिष्ट शैली में अभिव्यंजित करने के क्रम में परसाई ने जिस पैनेपन के साथ राजनीति की विसंगतियों को पकड़ा है, उसी तीक्ष्णता के साथ समाज और साहित्य के विविध आयामों की विरूपता को स्थापित किया है। निबन्धों लघुकथाओं कहानियों संस्मरण, रिपोर्ताज, उपन्यास आदि सभी साहित्यिक आयामों में शैली की सजगता व्यापकता एवं विविधता को देखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. साहित्यिक निबन्ध – राजनाथ शर्मा पृ. 363
2. हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान – डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी पृ. 110
3. परसाई रचनावली भाग–3 पृ. 7
4. कहत कबीर – ह. श. प.– पृ. 11
5. जैसे उनके दिन फिरे –ह. श. प. पू. 13
6. बेइमानी की परत –ह. श. प. पृ. 13 11. जैसे उनके दिन फिरे –ह. श. प. पृ. 24
7. परसाई रचनावली भाग–2 प . 347
8. हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान – डॉ. बालेन्दु शेखर
9. परसाई रचनावली भाग–3 पृ. 5
10. जैसे उनके दिन फिरे पृ. 87 16. कहत कबीर पृ. 81
11. परसाई रचनावली भाग–2 पृ. 298
12. साहित्यिक निबन्ध – राजनाथ शर्मा
13. परसाई रचनावली – भाग–3 पृ. 32 20. परसाई रचनावली भाग–2 पृ. 264
14. परसाई रचनावली भाग–4 पृ. 11
15. शिकायत मुझे भी है – ह. श. प पृ. 15
16. परसाई रचनावली भाग–2 पृ. 214
17. वैष्णव की फिसलन –ह.श.प.– पृ. 42
18. परसाई रचनावली भाग–2 पृष्ठ 5
19. हिन्दी के वैयक्तिक निबन्धों का उद्भव और विकास – डॉ. कृष्ण कुमार सिन्हा
20. और अन्त में –ह. श. प. पृ. 56
21. हिन्दी का स्वातन्त्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य डॉ. बा. शे. शे. तिवारी पृ. 200

❖◆❖